आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:25-10-14

हम आत्माओं को यह पुरानी कलयुगी दुनिया और नई सतयुगी दुनिया का फर्क समझा कर, देही-अभिमानी बनने का, पवित्रता का और पुरानी दुनिया से वैराग्य का पाठ सिखलाने वाले बेहद के टीचर-बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बाप तुम्हें सारे विश्व पर जीत पाने वा विश्व में शान्ति स्थापन करने के लिए कितनी सहज युक्ति बताते हैं. काम पर जीत पाने से तुम २१ जन्मो के लिए जगत जीत बनते हो.

यह तो हम सब जानते है कि बाबा आये है पुरानी दुनिया का विनाश करायें, नई सतयुगी दुनिया कि स्थापना करने के लिए. बाबा हम आत्माओं को नई दुनिया के लायक बनाने के लिए हमें तीन मुख्य धारणाओं के पाठ पढ़ाते है - देही-अभिमानी बनने का, पवित्रता का और बेहद के वैराग्यता को धारण करने का. बाबा की आज की मुरली से यह तीनों बातों को धारण करने के लिए कहे गये कुछ महा-वाक्यों को अलग-अलग करके पढ़ेंगे तो हमारे में तीनों को धारण करने का उमंग-उत्साह बढ़ेगा.

देही अभिमानी बनने के लिए कहे गये महा-वाक्यों -

- बाबा कहते है, तुमको कहा जाता है रुहानी बाप की रुहानी सेना. बाबा तुम्हें बाप से योग लगाकर रावण पर जीत पाने का कितना सहज पुरुषार्थ कराते है. इसको कहा जाता है गुप्त वारियर्स, गुप्त महावीर. पांच विकारों पर जीत पाते हो. इसमें भी पहले है - देह अभिमान. बाप तुम्हें सारे विश्व पर जीत पाने वा विश्व में शान्ति स्थापन करने के लिए कितनी सहज युक्ति बताते हैं. तुम विश्व में शांति का राज्य स्थापन कर रहे हो.

- बाबा कहते है, कलियुग घोर अन्धियारा है. कितना लड़ाई-झगड़ा मारा-मारी है. सतयुग में यह होती नहीं. तुम अपना राज्य देखो कैसे स्थापन कर रहे हो. इसमें कोई हाथ-पाव नहीं चलाते हो, इसमें देह का भान तोड़ना है. घर में रहते हो तो भी पहले यह याद करो - हम आत्मा हैं, देह नहीं. हम आत्माये ८४ जन्म भोगती है. यह हमारा अन्तिम जन्म है. पुरानी दुनिया अब खत्म होनी ही हैं.

- बाबा कहते है, तुम्हारा एम ऑबजेक्ट भी सामने है - लक्ष्मी-नारायण जैसा देवी-देवता बनने का. इसके लिए सिर्फ तुम्हें देह-अभिमान छोड़ अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करना है जिसे तुम्हारे पाप कट जाये.

पवित्रता की धारणा के लिए कहे गये महा-वाक्यों -

- बाबा कहते है, मीठे-मीठे बच्चों - काम पर जीत पाने से तुम २१ जन्मो के लिए जगत जीत बनते हो. वहॉ अशान्ति, दुख, रोग का नाम निशान नहीं होता.
- बाबा कहते है, मैं तुमको विश्व की बादशाही देने आया हूँ. तो तुम्हें अब पावन जरूर बनना पड़े. सो यह मृत्युलोक का अन्तिम जन्म पवित्र बनो.
- बाबा कहते है, सतयुग में तुम सम्पूर्ण निर्विकारी थे यहॉ हे सम्पूर्ण विकारी. अब तुम्हें स्वर्ग की स्मृति आई है तो अब गंदी बातें मत सूनो, मुख से बोलो भी नहीं.
- बाबा कहते है, पवित्र नहीं बनेंगे तो पवित्र दुनिया स्वर्ग में नहीं आयेंगे. यही भारत स्वर्ग था, कृष्णपुरी में था, अभी नर्कवासी में है. तो तुम बच्चों को खुशी से विकारों को छोड़ना चाहिए. अभी वैकुण्ठ में जाने के लिए पवित्र जरूर बनना है राजयोग से.
- बेहद के बाप कहते है - बच्चे, पवित्र बनो तो तुम सदा सुखी बनेंगे. सतयुग है अमरलोक, द्वापर-कलियुग है मृत्युलोक.

वैराग्यता की धारणा के लिए कहे गये महा-वाक्यों -

- बाबा कहते है, यह है ही पाप आत्माओं की दुनिया. पाप आत्माओं की दुनिया में करोड़ों आदमी है. पुण्य आत्माओं की दुनिया में होते है ९ लाख से शुरु. वहॉ तुम विश्व के मालिक बनते हो.
- बाबा कहते है, इस पुरानी दुनिया का विनाश सामने तैयार है. यह बॉम्ब्स आदि घर बैठे ऐसे छोड़ेंगे जो सारी दुनिया खलास कर देंगे. तुम बच्चे योगबल से विश्व के मालिक बन जाते हो. तुम शांति स्थापन कर रहे हो योगबल से. वह सारी दुनिया खत्म कर देंगे साईन्स बल से. वह तुम्हारे सर्वन्ट है. तुम्हारी सर्विस कर रहे है. यह सारी प्रकृति भी तुम्हारी गुलाम बन जाती है. सिर्फ तुम बाप से योग लगाते हो. तो तुम बच्चों के अन्दर बड़ी खुशी होनी चाहिए.
- बाबा कहते है, तुम बच्चे समझते हो अब हम को वापस जाना है. बाप आया है घर ले जाने के लिए. पाप आत्माये तो शांतिधाम-सुखधाम में जा नहीं सकेगी. वह तो रहती है दुखधाम में इसलिए अब बाप कहते है मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जाएं.

ॐ शांति.